मधु सिंह
31, मार्च, 2020

मन्नू भंडारी का साहित्यिक परिचय

वर्तमान युग 'महिला उत्थान युग' माना जाता है। जब स्त्रियों के संस्कारों और सामाजिक बाधाओं की बेड़ियाँ काटकर महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे निकल रही हैं। हिंदी साहित्य क्षेत्र में मन्नू भंडारी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने भारतीय नारी, समाज, देश आदि की समस्याओं को यथार्थ रूप में चित्रित कर अनेक ज्वलंत मानवीय प्रश्नों को उठाया है। वास्तव में हिंदी साहित्य में मन्नू भंडारी का नाम एक महत्वपूर्ण ~~ख्यातलब्ध~~ कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध था, लेकिन उनके दो मौलिक उपन्यास - 'आपका बंटी' और 'महाभोज' के कारण उन्हें विशेष प्रसिद्धि मिली है।

मन्नू भंडारी का जन्म 3, ~~मई~~ अप्रैल, 1931 को मध्यप्रदेश स्थित भानपुरा नामक गाँव में हुआ। मन्नू जी अपने माता-पिता की पाँचवीं संतान होने के कारण वह सभी की लाडली ही थी। उनका पूरा नाम महेंद्र कुमारी है। घर में सबसे छोटी होने के कारण सब लोग उन्हें प्यार से 'मन्नू' ~~भंडारी~~ पुकारते थे और यही नाम से वह साहित्य के क्षेत्र में भी जानी गईं।

मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व बनाने में उनके माता-पिता का विशेष योगदान है। क्योंकि उनकी ~~बड़ी~~

Scanned by CamScanner

माँ अपनी बेटी को घर के कार्यों की जिम्मेदारी से हमेशा दूर देती थीं। मन्नू भंडारी के पिता सुखसम्पतराय ~~लकीर के फकीर~~ राष्ट्रीय आंदोलन के कार्यकर्ता थे। अपने पिता जी से ही उनको लेखन संस्कार भी प्राप्त हुआ।

मन्नू भंडारी की प्रकाशित रचनाएँ :-

कहानी संग्रह :-

मैं हार गई — 1957 ई०

तीन निगाहों की तस्वीर — 1959 ई०

यही सच है — 1966 ,,

एक प्लेट सैलाब — 1968 ,,

आँखों देखा झूठ — 1976
(बाल कहानियां)

त्रिशंकु — 1978 ,,

उपन्यास

एक इंच मुस्कान (राजेंद्र यादव के साथ) — 1961 ई०

कलवा (बाल उपन्यास) — 1971 ई०

आपका बंटी (— 1971 ई०

महाभोज — 1979 ई

स्वामी (लघु उपन्यास, यह उपन्यास मौलिक रूप से बांग्ला साहित्यकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखी गयी है, जिसमें थोड़ा परिवर्तन कर के

Scanned by CamScanner

मन्नू भंडारी ने लघु उपन्यास का आकार दिया।

आस- मातो (उपन्यास)

नाटक

बिना दिवारों के घर — 1966 ई०

महाभोज (नाट्य रूपान्तर) — 1983 "

मन्नू भंडारी जी को सन् 1986 में पद्मश्री तथा साहित्य कला परिषद, दिल्ली द्वारा दिया जाना ~~था~~ ~~बलराज पुरस्कार~~, इन दोनों पुरस्कारों को उन्होंने अस्वीकार किया। इसके अलावा 'महाभोज' के लिए भारतीय भाषा परिषद की ओर से, पुरस्कृत किया गया।

Scanned by CamScanner